भारत सरकार

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 3675

11.08.2025 को उत्तर के लिए

सुंदरबन मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण

3675. श्री जगन्नाथ सरकार :

क्या **पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को विगत दशक के दौरान सुंदरबन में अत्यधिक सघन मैंन्ग्रोव क्षेत्र में 4.23 प्रतिशत की कमी होने की जानकारी है, यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं;

(ख) सरकार द्वारा रॉयल बंगाल टाइगर पर्यावास सहित मैन्ग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र के लिए लवणीकरण, क्षरण और खतरों से निपटने के लिए क्या उपाय किए गए हैं/किए जा रहे हैं; और

(ग) जैव-विविधता के संरक्षण, स्थानीय आजीविका को बनाए रखने और चक्रवातों के खिलाफ प्राकृतिक बफर के रूप में अपनी भूमिका को सुदृढ़ करने के लिए सुंदरबन में संरक्षण प्रयासों को बढ़ाने के लिए क्या योजनाएं हैं?

उत्तर

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री
(श्री कीर्तवर्धन सिंह)

(क) भारत वन स्थिति रिपोर्ट (आईएसएफआर) 2013 और आईएसएफआर 2023 के अनुसार, सुंदरबन सहित पश्चिम बंगाल में कुल मैंग्रोव क्षेत्र क्रमशः 2,097 वर्ग किमी और 2,119.16 वर्ग किमी है, इस प्रकार पिछले दशक में 22.16 वर्ग किमी की वृद्धि परिलक्षित होती है। यह वृद्धि काफी हद तक राज्य और केंद्रीय स्कीमों जैसे मिष्टी और काम्पा-मनरेगा अभिसरण के तहत वनीकरण और पारि-बहाली प्रयासों की वजह से है। सरकार ने देश भर में मैंग्रोव वृक्षारोपण के संरक्षण, इन्हें बनाए रखने और इनकी वृद्धि के लिए प्रचारात्मक और विनियामक उपायों को लागू किया है। तटीय विनियमन क्षेत्र (सीआरजेड) अधिसूचनाओं जैसे नियामक पहलों ने विनाशकारी क्रियाविधियों पर अंकुश लगाया है और प्राकृतिक उत्थान को बढ़ावा दिया है, जबकि प्रमुख प्रचारात्मक पहलों में 'मैंग्रोव और कोरल रीफ का संरक्षण और प्रबंधन' स्कीम और मिष्टी कार्यक्रम शामिल है जिन्हें सभी तटीय राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है।

(ख) रॉयल बंगाल टाइगर पर्यावास सहित मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र के लिए लवणीकरण, क्षरण और अन्य खतरों से निपटने हेतु, सरकार ने पश्चिम बंगाल राज्य सरकार के साथ मिलकर एकीकृत तटीय क्षेत्र प्रबंधन (आईसीजेडएम) परियोजनाएँ लागू की हैं, जिनमें मैंग्रोव वनरोपण, लवणीय तटबंधों को सुदृढ़ बनाना और वैकल्पिक आजीविका को बढ़ावा देना शामिल है। हरित भारत मिशन के तहत पर्यावरण-बहाली पहलों और सुंदरबन टाइगर रिज़र्व में बाघ परियोजना के तहत रॉयल बंगाल टाइगर के संरक्षण प्रयासों से अतिरिक्त सहायता मिलती है, जिसमें शिकार विरोधी शिविर, पर्यावास सुधार और कैमरा ट्रैप तथा उपग्रह टेलीमेट्री का उपयोग करके निगरानी शामिल

है। राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थानों के सहयोग से लवणता, जलविज्ञान संबंधी परिवर्तनों और तटरेखा अपरदन की निरंतर निगरानी भी की जाती है।

(ग) **जैव विविधता के संरक्षण, स्थानीय आजीविका को बनाए रखने और चक्रवातों के खिलाफ प्राकृतिक बफर के रूप में इसकी भूमिका को सुदृढ़ करने हेतु सुंदरबन में संरक्षण प्रयासों को** बढ़ाने के लिए, की गई मुख्य पहलों में जैव विविधता, आपदा प्रतिरोधक क्षमता और सामुदायिक भागीदारी पर एकीकृत ध्यान देते हुए, सुंदरबन जैवमंडल के दीर्घकालिक संरक्षण हेतु एक व्यापक प्रबंधन योजना तैयार करना शामिल है। वनीकरण और बहाली के माध्यम से मैंग्रोव क्षेत्र का विस्तार करने, पूर्व चेतावनी प्रणालियों और जलवायु-प्रतिरोधी बुनियादी ढाँचे को मजबूत करने, और संयुक्त वन प्रबंधन समितियों (जेएफएमसी) के माध्यम से स्थानीय समुदायों को पारिस्थितिकी-विकास और मैंग्रोव प्रबंधन में सक्रिय रूप से शामिल करने के प्रयास जारी हैं।

***